

Smt. Ushakiran Khan

Smt. Ushakiran Khan is well established as a prolific writer, educator, social worker and an artistic person .

2. Born on October 24, 1945 in a Gandhian family, Smt. Khan graduated in 1964 from Patna College and done Masters in Ancient Indian History & Archeology in 1966 from Patna University. She was awarded her Ph.D. in 1995 on the topic, 'Mithila: A Cultural Study'. She has served as the Head of the Department of Ancient Indian History and Archeology at a Degree college in Patna under Magadh University till 2005.

3. Smt. Khan is inhabitant of a region in Bihar, which is like a 'no man's land' caught between the turbulent shores of Koshi river where even now the only transport is a boat and a bullock cart. She is the first writer from this region. Her writing is honest and clean with a unique blend of intellect, research and social cohesiveness and sensitivity.

4. Smt. Khan continued writing while she was teaching Ancient Indian History & Archeology. She has been contributing equally to Hindi as well as Maithili literature. She started the tradition of writing stories based in villages. Her stories got consistently published in popular literary magazines and journals. Eminent Editors like Dharmveer Bharti and Rajendra Yadav hailed her as a pioneer of rural stories which began the fading away of the era of 'Akahani' movement (post modern non story). She has written 6 Novels, 9 Story Collections, 2 Plays, 1 Biography in Hindi, and 6 Novels, 3 Plays, 2 Story Collections in Maithili.

5. Smt. Khan has lately written unique novels after doing historical research. The tradition of writing historical masterpieces was getting lost somewhere. If there is any chance of portraying the eradication of social evils and religious tolerance, that can only be done by revisiting history which has been exemplified by Smt. Khan through her award winning novels Bhamati, Sirjanhaar, Hasina Manzil and Agan Hindola. Her two plays, 'Kahan Gaye Mere Ugna' and 'Hira Dom' are true portrayals of present times and marginalized sections of society. Having lived in the ferocious "Koshi" river belt, amongst the "dalit" people, Smt. Khan has always fulfilled her social responsibility through her writings.

6. Smt. Khan is recipient of several honours and Awards which include Hindi Sewi Puraskar by Rashtrabhasha Parishad in 1995, Mahadevi Verma Puraskar by Bihar Rajbhasha Vibhag in 1998, Dinkar Puraskar in 2000, Sahitya Academy Award by Govt. of India in 2012, Kusumanjali Puraskar in 2013, Vidyaniwas Mishra Puraskar for Sirjanhaar in 2014 and Brajkishore Prasad Puraskar in 2015. Having written 6 Novels, 9 Story Collections, 2 Plays, 1 Biography in Hindi, and 6 Novels, 3 Plays, 2 Story Collections in Maithili.



श्रीमती उषाकिरण खान

श्रीमती उषाकिरण खान, सुस्थापित बहुसर्जक लेखक, शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता और एक कलाप्रेमी व्यक्ति हैं।

2. आपका जन्म गांधी परिवार में अक्तूबर 24, 1945 को हुआ। आपने पटना कॉलिज से सन् 1964 में स्नातक की डिग्री और पटना विश्वविद्यालय से सन् 1966 में भारत के प्राचीन इतिहास और पुरातत्व विज्ञान में मास्टर की डिग्री प्राप्त की। आपको 'मिथिला: अ कल्चरल स्टडी' पर सन् 1995 में पीएच.डी प्रदान की गई। आपने मिथिला विश्वविद्यालय के अंतर्गत पटना के डिग्री कॉलिज के प्राचीन भारतीय इतिहास और पुरातत्व विज्ञान के विभागाध्यक्ष के रूप में सन् 2005 तक कार्य किया।

3. आप बिहार के एक ऐसे क्षेत्र में निवास करती हैं जो 'किसी की भी ज़मीन नहीं' जैसी भूमि है और जो कोशी नदी के अशांत किनारों के बीच है, जहां आज भी आवागमन का साधन केवल नाव और बैलगाड़ी ही है। आप इस क्षेत्र से पहली लेखिका हैं। आपका लेखन, निष्कपट और स्पष्ट है जिसमें प्रतिभा, अनुसंधान और सामाजिक साहचर्यता और संवेदनशीलता का अनुपम मेल है।

4. जब आप प्राचीन भारतीय इतिहास और पुरातत्व विज्ञान का अध्यापन कर रही थीं तब भी आपने लेखन कार्य जारी रखा। आपने हिन्दी के साथ-साथ मैथिली साहित्य में समान योगदान किया। आपने गांवों पर आधारित कहानियां लिखने की परंपरा शुरू की। आपकी कहानियां निरंतर रूप से लोकप्रिय साहित्यिक मैग्जीनों और पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहीं। धर्मवीर भारती और राजेन्द्र यादव जैसे सुप्रसिद्ध संपादकों ने आपकी प्रशंसा की कि आप ग्रामीण कहानियां लिखने के पथप्रदर्शक हैं जो 'अकहानी' आंदोलन के समाप्त होते युग से प्रारंभ हुआ (अकहानी के बाद आधुनिक)। आपने हिन्दी में 6 उपन्यास, 9 कहानी संग्रह, 2 नाटक, एक आत्मकथा और मैथिली में 6 उपन्यास, 3 नाटक, 2 कहानी संग्रह लिखे।

5. बाद में आपने ऐतिहासिक खोज करने के बाद विशिष्ट उपन्यास लिखे। परंपरागत उत्तम ऐतिहासिक उपन्यास लेखन कहीं खो सा गया गया था। यदि सामाजिक बुराइयां दूर करने और धार्मिक सहिष्णुता दर्शाने का कोई अवसर है तो वह इतिहास में पुन: झांक कर ही प्राप्त किया जा सकता है, जिसे आपने भामति, सृजनहार, हसीन मंजिल और अगन हिन्डोला जैसे पुरस्कृत उपन्यासों के माध्यम से अनुकरणीय ढंग से पूरा किया है। 'कहां गए मेरे अंगना' और 'हीरा डोम' नामक आपके दो नाटकों में वर्तमान युग और समाज के कमजोर वर्गों को सही ढंग से चित्रित किया गया है। 'कोशी' नदी के क्रूर किनारों और दलित लोगों के बीच रह कर आपने अपने लेखन के माध्यम से हमेशा ही अपनी सामाजिक जिम्मेदारियां पूरी कीं।

6. आपको कई सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, जिनमें राष्ट्रभाषा परिषद द्वारा सन् 1995 में हिंदी सेवी पुरस्कार, बिहार राजभाषा विभाग द्वारा सन् 1998 में महादेवी वर्मा पुरस्कार, सन् 2000 में दिनकर पुरस्कार, भारत-सरकार द्वारा सन् 2012 में साहित्य अकादमी पुरस्कार, सन् 2013 में कुसुमांजलि पुरस्कार, सन् 2014 में सृजनहार के लिए विद्यानिवास मिश्र पुरस्कार और सन् 2015 में ब्रजकिशोर प्रसाद पुरस्कार शामिल हैं। आपने हिंदी में 6 उपन्यास, 9 कहानी संग्रह, 2 नाटक और 1 आत्मकथा तथा मैथिली में 6 उपन्यास, 3 नाटक, 2 कहानी संग्रह लिखे हैं।